JRLA, 3(8), August, 2026: 169- 174

Online ISSN: 3048-667X
CODEN (CAS, USA): JRLAB4
Impact Factor: 3.66

JOURNAL OF THE ROYAL LAUREATES ACADEMY
www.rlaindia.org

पंडवानी : सांस्कृतिक एवं एतिहासिक परिप्रेक्ष्य में एक विश्लेषण

डॉ जीवन लाल जायसवाल

इतिहास विभाग (अतिथि व्याख्याता)

सरदार वल्लभभाई पटेल शासकीय महाविद्यालय

कोतरी, जिला मुंगेली (छत्तीसगढ़) भारत

संस्कृति किसी भी समाज की आत्मा होती है और लोक कलाएँ उस आत्मा की अभिव्यक्ति। छत्तीसगढ़ की पावन धरा अपनी विविधता और लोक–रंगों के लिए विश्व विख्यात है। यहाँ की लोक गाथाओं में 'पंडवानी' का स्थान सर्वोपरि है। यह केवल एक गायन शैली नहीं है, बल्कि यह छत्तीसगढ़ के जनमानस के शौर्य, नैतिकता और भक्ति का जीवंत प्रमाण है।'पंडवानी' शब्द की उत्पत्ति 'पांडव वाणी' से हुई है, जिसका शाब्दिक अर्थ है—पांडवों की कथा। भारतीय वांग्मय के महान महाकाव्य 'महाभारत' को जब क्षेत्रीय लोक भाषा (छत्तीसगढ़ी) और लोक शैली में पिरोया गया, तो उसने पंडवानी का स्वरूप ले लिया। इसमें महाभारत के पात्रों को स्थानीय परिवेश के अनुसार ढालकर प्रस्तुत किया जाता है।'

वस्तुतः में ज्ञान के हस्तांतरण की दो पद्धतियाँ रही हैं—एक लिखित और दूसरी वाचिक। पंडवानी वाचिक परंपरा का एक उत्कृष्ट उदाहरण है। सदियों से अशिक्षित या अल्प–शिक्षित ग्रामीण अंचलों में भी महाभारत के नैतिक मूल्य और वीरता की गाथाएँ इसी माध्यम से जीवित रही हैं। यह लोक कला पीढ़ी–दर–पीढ़ी मौखिक रूप से एक कलाकार से दूसरे कलाकार तक पहुँचती रही है। पंडवानी की सबसे बड़ी विशेषता इसका नायक–केंद्रित होना है स छत्तीसगढ़ी पंडवानी में 'भीम' को केंद्र में रखा जाता है। भीम की अदम्य शक्ति, साहस और उनके द्वारा किए गए संघर्ष आम जनता के लिए प्रेरणा के मुख्य स्रोत हैं। यही कारण है कि पंडवानी में 'गदा' और 'शौर्य' का प्रदर्शन प्रमुखता से होता है।

Online ISSN: 3048-667X
CODEN (CAS, USA): JRLAB4
Impact Factor: 3.66

पंडवानी का इतिहास सीधा महाभारत काल की मान्यताओं से जुड़ा है। ऐतिहासिक और पौराणिक प्रमाणों के अनुसार, वर्तमान छत्तीसगढ़ का क्षेत्र प्राचीन काल में 'दक्षिण कोसल' और 'दंडकारण्य' के नाम से जाना जाता था। जनश्रुतियों के अनुसार, पांडवों ने अपने अज्ञातवास का एक लंबा समय छत्तीसगढ़ के वनों में व्यतीत किया था। यही कारण है कि यहाँ के लोग महाभारत की कथा को किसी बाहरी प्रदेश की कहानी नहीं, बल्कि अपनी ही मिट्टी की गाथा मानते हैं। इसी अपनेपन ने 'पंडवानी' को जन्म दिया।

प्राचीन समय में यह मुख्य रूप से छत्तीसगढ़ की 'प्रधान' जैसी जनजातियों द्वारा गाया जाता था। ये लोग गोंड राजाओं के यहाँ वीरता की गाथाएँ सुनाने का कार्य करते थे। धीरे–धीरे यह शैली जनजातीय घेरे से बाहर निकलकर ग्रामीण और शहरी क्षेत्रों के जनमानस का हिस्सा बन गई।

मध्यकाल के दौरान, जब क्षेत्रीय राजाओं का शासन था, तब पंडवानी मनोरंजन का एक बड़ा माध्यम बनी।सांप्रदायिक सद्भाव के दौरान पंडवानी ने जातिगत बंधनों को तोड़कर समाज को जोड़ने का काम किया। भाषा का विकास 14वीं से 17वीं शताब्दी के बीच जब क्षेत्रीय बोलियों का विकास हो रहा था, तब पंडवानी ने पूर्णतः छत्तीसगढ़ी स्वरूप धारण कर लिया, जिससे यह जन–जन तक पहुँच सकी।मध्यकाल में भारत में भक्ति आंदोलन की लहर थी स इसका प्रभाव छत्तीसगढ़ पर भी पड़ा संस्कृत के बजाए स्थानीय 'छत्तीसगढ़ी' में कथा कहने की प्रवृत्ति बढ़ी। पंडवानी ने जटिल संस्कृत महाभारत को सरल लोक भाषा में बदलकर आम जनता तक पहुँचाया।

छत्तीसगढ़ में लंबे समय तक शासन करने वाले कलचुरी राजाओं ने स्थानीय लोक कलाओं को फलने–फूलने का अवसर दिया। पंडवानी मुख्य रूप से एक लोक विधा थी, लेकिन कई राजाओं ने 'चारण' और 'प्रधान' कलाकारों को सम्मानित किया। ये कलाकार राजाओं के शौर्य की तुलना महाभारत के पात्रों (विशेषकर भीम और अर्जुन) से करते थे। इसी क्रम में उन्होंने महाभारत के कथाओं को छत्तीसगढ़ी लोक रंग में रंगा। तत्कालीन समय में लेखन की कमी थी, इसलिए इन कलाकारों ने अपनी स्मृति के माध्यम से हजारों पंक्तियों की इस कथा को सुरक्षित रखा। मध्यकाल में यह "श्रुति परंपरा" इतनी मजबूत हुई कि कथा का मूल स्वरूप आज भी सुरक्षित है।

यद्यपि मध्यकाल युद्धों और संघर्षों का काल भी था। पंडवानी का 'वीर रस' उस समय के समाज के लिए ऊर्जा का स्रोत था, जिससे योद्धाओं ने इसे अपनी संस्कृति का हिस्सा बनाए रखा स मध्यकाल में ही पंडवानी के वाद्य यंत्रों, विशेषकर तंबूरा और खड़ताल का स्वरूप निश्चित हुआ। यह माना जाता है कि इसी दौर में तंबूरा केवल एक संगीत वाद्य न रहकर 'प्रतीकात्मक शस्त्र' के रूप में उभरा, जो छत्तीसगढ़ी लोक कला की एक विशिष्ट पहचान बन गया सऐतिहासिक रूप से पंडवानी को दो शाखाओं में विभाजित किया जा सकता है– वेदमती शैली और कापालिक शैली 'वेदमती' नाम 'वेद' से प्रेरित है इसमें महाभारत के ग्रंथों और मान्यताओं का कड़ाई से पालन किया जाता है। कलाकार

Online ISSN: 3048-667X
CODEN (CAS, USA): JRLAB4
Impact Factor: 3.66

कथा की शुद्धता और क्रमबद्धता पर विशेष ध्यान दिया जाता है। इसमें कलाकार की मुद्रा गंभीर होती है। इस शैली की सबसे बड़ी तकनीकी विशेषता यह है कि कलाकार पूरे समय बैठकर प्रस्तुति देता है। इसमें शारीरिक मुद्राओं की तुलना में गायन और शब्दों पर अधिक जोर होता है। इसका मुख्य उद्देश्य कथा के माध्यम से नैतिक और आध्यात्मिक उपदेश देना होता है। झाड़ूराम देवांगन, पुनाराम निषाद और ऋतु वर्मा इस शैली के कलाकार हैं।

'कापालिक' शब्द का संबंध मस्तिष्क या स्मृति से माना जाता है, जहाँ कलाकार अपनी स्मृति और रचनात्मकता से कथा का ताना–बाना बुनता है। यह शैली प्रदर्शन और अभिनय पर आधारित है। कापालिक शैली में 'आंगिक अभिनय' प्रधान होता है। कलाकार अपने चेहरे के भावों और हाथों की मुद्राओं से युद्ध, प्रेम, क्रोध और करुणा के दृश्यों को जीवंत कर देता है। इसमें कलाकार खड़े होकर मंच पर इधर–उधर घूमते हुए और नृत्य करते हुए कथा सुनाता है। यह अधिक ऊर्जावान और दृश्यपरक शैली है। इसमें कलाकार को थोड़ी स्वतंत्रता होती है कि वह कथा के प्रवाह में अपनी कल्पना और लोक–अनुभवों को जोड़ सके। इसकी सबसे लोकप्रिय कलाकार डॉक्टर तीजन बाई हैंस तीजन बाई ने इस शैली को वैश्विक स्तर पर पहुँचाकर पंडवानी के इतिहास में एक नया अध्याय जोड़ा।

पंडवानी में तंबूरा एक मुख्य वाद्य यंत्र है। यह कला का 'प्राण' है। प्रदर्शन के दौरान गायक इसे कभी अर्जुन का धनुष, कभी भीम की गदा, कभी दुर्योधन की जंघा, तो कभी द्रौपदी के बाल के रूप में प्रयोग करता है। यह 'दृश्य रूपक' छत्तीसगढ़ी लोक कला की रचनात्मकता का शिखर है। खड़ताल की आवाज युद्ध के मैदान में घोड़ों की टाप या तलवारों की खनक का आभास कराती है, जो प्रदर्शन में वीर रस भर देती है। पंडवानी केवल एक प्रदर्शनकारी कला नहीं है, बल्कि यह छत्तीसगढ़ी जीवन पद्धति का एक अनिवार्य हिस्सा है।

पंडवानी छत्तीसगढ़ी भाषा के संरक्षण का सबसे बड़ा माध्यम है।इसमें प्रयोग होने वाले मुहावरे, लोकोक्तियाँ और ठेठ छत्तीसगढ़ी शब्द इस भाषा की समृद्धि को दर्शाते हैं। इसने 'व्यास महाभारत' को पूरी तरह से छत्तीसगढ़ी सांचे में ढाल दिया है। यहाँ पांडव कोई दूर के पौराणिक देवता नहीं, बल्कि घर–परिवार के सदस्य जैसे लगते हैं। भीम को एक शक्तिशाली लेकिन सरल हृदय वाले 'छत्तीसगढ़ी किसान' के रूप में देखा जाता है, जो अन्याय के खिलाफ लाठी उठाता है। गाँवों में पंडवानी का आयोजन 'अखरा' या चौपालों पर होता है। यहाँ ऊँच–नीच का भेद भूलकर पूरा गाँव एक साथ बैठकर शौर्य गाथा सुनता है, जो सामाजिक एकजुटता को बढ़ावा देता है। लिखित साहित्य से दूर रहने वाले ग्रामीण अंचलों में पंडवानी ने 'सत्यमेव जयते' और 'अधर्म पर धर्म की विजय' जैसे मूल्यों को मौखिक रूप से जीवित रखा है। यह नई पीढ़ी को अपनी जड़ों और पूर्वजों के पराक्रम से जोड़ने का एक सांस्कृतिक सेतु है।

20वीं शताब्दी के उत्तरार्ध में पंडवानी का इतिहास एक बड़े बदलाव से गुजरा। परंपरागत रूप से पुरुष प्रधान मानी जाने वाली इस विधा में महिलाओं (जैसे तीजन बाई, शांतिबाई चेलक) ने प्रवेश किया और इसे नई ऊँचाइयों पर

Online ISSN: 3048-667X
CODEN (CAS, USA): JRLAB4
Impact Factor: 3.66

पहुँचाया। आज पंडवानी छत्तीसगढ़ी महिला की शक्ति और आत्मविश्वास का वैश्विक प्रतीक बन चुकी है स अंतरराष्ट्रीय पहचान हबीब तनवीर जैसे रंगकर्मियों ने पंडवानी कलाकारों को आधुनिक मंच प्रदान किया। राष्ट्रीय सम्मान पद्म पुरस्कारों (पद्म श्री, पद्म भूषण, पद्म विभूषण) के माध्यम से सरकार ने इस ऐतिहासिक विधा को आधिकारिक मान्यता दी, जिससे यह लुप्त होने से बच गया है।

पंडवानी एक सामूहिक कला है। पंडवानी का मूल स्वरूप 'शौर्य' और 'वीरता' है। हालाँकि इसमें करुण, रौद्र और हास्य रस का भी शामिल होता है, लेकिन मुख्य रूप से यह पांडवों के पराक्रम की गाथा है। गायक की आवाज में भारीपन, ऊँचे स्वर और युद्ध दृश्यों का सजीव वर्णन श्रोताओं में जोश भर देता है। गायक अपनी आवाज बदलकर अलग–अलग पात्रों (जैसे द्रौपदी की करुणा या दुर्योधन का अहंकार) को व्यक्त करता है। इसमें मुख्य गायक के साथ एक 'रागी' होता है जो अत्यंत महत्वपूर्ण है कभी–कभी रागी प्रश्न पूछता है, जिसका उत्तर गायक कथा के माध्यम से देता है। गायक की बातों के बीच में रागी 'हूँ–हूँ' या 'हाँ–हाँ' भरता है, जिससे लय बनी रहती है। इसमें स्थानीय लोकोक्तियों, मुहावरों और गालियों का प्रयोग किया जाता है, जो इसे बनावटीपन से दूर रखकर मिट्टी से जोड़ता है।पंडवानी का उद्देश्य केवल मनोरंजन नहीं है। इसकी एक मुख्य विशेषता समाज को नैतिक शिक्षा देना है। यह बड़ों का सम्मान, और विपत्ति में धैर्य रखने जैसे मूल्यों को लोक कथाओं के जरिए जनता के अवचेतन मन में स्थापित करती है।

छत्तीसगढ़ी पंडवानी की सबसे बड़ी विशेषता भीम को नायक बनाना है। यहाँ भीम केवल एक योद्धा नहीं, बल्कि आम आदमी के रक्षक और न्याय के प्रतीक हैं। उनकी गदा, उनकी भूख, और उनके क्रोध को लोक–जीवन के संघर्षों से जोड़कर दिखाया जाता है। जब कोई कलाकार छत्तीसगढ़ी बोली में पांडवों के शौर्य का वर्णन करता है, तो स्थानीय जनमानस में अपनी भाषा और संस्कृति के प्रति गर्व का भाव जागृत होता है। यह 'क्षेत्रीय गौरव' समाज को अपनी जड़ों से जुड़े रहने की प्रेरणा देता है। पंडवानी ने छत्तीसगढ़ी भाषा के मुहावरों, कहावतों और प्राचीन शब्दों को लुप्त होने से बचाया है। समाज की आने वाली पीढ़ी अपनी मातृभाषा के समृद्ध स्वरूप से इसी माध्यम से परिचित होती है, जो भाषाई विविधता के संरक्षण के लिए अनिवार्य है।

वस्तुत ग्रामीण अंचलों में, जहाँ मनोरंजन के साधन सीमित थे, पंडवानी ने लोगों को मानसिक तनाव से दूर रखने और मनोरंजन प्रदान करने का कार्य किया। संघर्षपूर्ण जीवन जीने वाले किसान और श्रमिक जब भीम के पराक्रम की गाथा सुनते हैं, तो उनमें एक प्रकार की मनोवैज्ञानिक ऊर्जा और संघर्ष करने की शक्ति का संचार होता है। यद्यपि इसकी शुरुआत 'प्रधान' और 'देवार' जैसी विशिष्ट जातियों से हुई, लेकिन इसकी लोकप्रियता ने जातिगत सीमाओं को तोड़ दिया। आज पंडवानी सुनने के लिए हर जाति और वर्ग के लोग एक साथ बैठते हैं।

Online ISSN: 3048-667X
CODEN (CAS, USA): JRLAB4
Impact Factor: 3.66

बीसवीं सदी के मध्य तक पंडवानी मुख्य रूप से पुरुष कलाकारों तक सीमित थी। समाज में यह धारणा थी कि महिलाएं मंच पर खड़े होकर शौर्य प्रदर्शन (विशेषकर कापालिक शैली) नहीं कर सकतीं। लेकिन आधुनिक काल में इसका सबसे बड़ा सामाजिक प्रभाव महिलाओं की भागीदारी के रूप में उभरा है। पंडवानी के इतिहास और विकास में महिलाओं की भागीदारी एक क्रांतिकारी अध्याय है स महिला कलाकारों ने द्रौपदी के दुख, गांधारी की ममता और कुंती के संघर्ष को अधिक संवेदनशीलता के साथ प्रस्तुत किया।

पंडवानी में महिलाओं की भागीदारी की बात तीजन बाई के बिना अधूरी है।उन्होंने पहली बार कापालिक शैली (खड़े होकर प्रदर्शन करना) को अपनाकर पुरुष वर्चस्व को चुनौती दी। तीजन बाई ने अपनी सशक्त आवाज और अद्भुत अभिनय से पंडवानी को रूस, फ्रांस और इंग्लैंड जैसे देशों के मंचों तक पहुँचाया। उन्हें मिले पद्म विभूषण जैसे सम्मानों ने समाज में महिला कलाकारों के प्रति दृष्टिकोण को पूरी तरह बदल दिया।शांति बाई चेलक ने कापालिक शैली में अपनी एक विशिष्ट पहचान बनाई और लोक कला की निरंतरता को बनाए रखा। ऋतु वर्मा वेदमती शैली (बैठकर गायन) की एक सशक्त आवाज हैं। उनकी प्रस्तुति में शास्त्रीयता और भाषा की शुद्धता का अद्भुत मेल मिलता है। उषा बारले ने पंडवानी के माध्यम से सामाजिक संदेशों को जन–जन तक पहुँचाने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई है।

महिलाओं ने महाभारत की गाथा को केवल एक युद्ध के रूप में नहीं, बल्कि मानवीय संवेदनाओं और परिवार के भीतर के संघर्षों के नजरिए से पेश किया, जिससे महिला श्रोता भी इससे गहराई से जुड़ सकीं पंडवानी के माध्यम से ग्रामीण और जनजातीय महिलाओं को आर्थिक स्वतंत्रता मिली। मंच पर हजारों लोगों के सामने महाभारत की वीरता का बखान करने से इन महिलाओं के आत्मविश्वास में वृद्धि हुई, जिसका सकारात्मक प्रभाव छत्तीसगढ़ी समाज की अन्य महिलाओं पर भी पड़ा।

इस प्रकार यह स्पष्ट होता है कि पंडवानी केवल छत्तीसगढ़ की एक लोक गायन शैली मात्र नहीं है, बल्कि यह भारतीय संस्कृति की उस वाचिक परंपरा का प्रतीक है जिसने हजारों वर्षों से महाभारत जैसे महाकाव्य को जीवित रखा है। ऐतिहासिक दृष्टिकोण से देखें तो दक्षिण कोसल (छत्तीसगढ़) की भूमि का पांडवों से गहरा जुड़ाव इस कला की जड़ों को और भी मजबूत बनाता है। मध्यकाल से लेकर वर्तमान तक, पंडवानी ने समय के साथ खुद को ढाला है, जो इसकी जीवंतता का प्रमाण है। सांस्कृतिक रूप से पंडवानी ने 'वेदमती' और 'कापालिक' जैसी विशिष्ट शैलियों के माध्यम से लोक कला को एक नया आयाम दिया है। इसमें तंबूरा का प्रतीकात्मक उपयोग और भीम को नायक के रूप में स्थापित करना छत्तीसगढ़ी लोक–मानस की मौलिक सोच को दर्शाता है। हालाँकि पंडवानी ने अंतरराष्ट्रीय ख्याति प्राप्त की है, परंतु आधुनिकता और डिजिटल मनोरंजन के इस युग में इसके समक्ष कुछ गंभीर चुनौतियां भी हैं। नई पीढ़ी का झुकाव पाश्चात्य संस्कृति की ओर होने के कारण पारंपरिक 'रागी' और वादकों की कमी महसूस की जा रही है। लिखित साक्ष्यों का अभाव भी इसके शुद्ध स्वरूप के लिए एक जोखिम पैदा करता है। पंडवानी के अस्तित्व को अक्षुण्ण बनाए

Online ISSN: 3048-667X
CODEN (CAS, USA): JRLAB4
Impact Factor: 3.66

रखने के लिए इसे शिक्षा के साथ जोड़ना अनिवार्य है। सरकारी और गैर–सरकारी संस्थाओं को चाहिए कि वे युवा पीढ़ी को इस कला के प्रति प्रेरित करने के लिए कार्यशालाएं और उचित सुविधा प्रदान करें।

अंततः, पंडवानी छत्तीसगढ़ की कला अतीत के गौरव, वर्तमान की अभिव्यक्ति और भविष्य की प्रेरणा का एक अनूठा संगम है। महाभारत के युद्ध की वह गूँज, जो सदियों पहले कुरुक्षेत्र में सुनाई दी थी, आज पंडवानी के माध्यम से छत्तीसगढ़ की चौपालों में न्याय और साहस का स्वर बनकर गूँज रही है। इसका संरक्षण न केवल एक प्रदेश की कला का संरक्षण है, बल्कि मानवता की साझा सांस्कृतिक विरासत को बचाए रखने का एक संकल्प है।

संदर्भ ग्रंथ सूची

- एल्विन, वेरियर (1951), मध्य भारत का जनजाति कला, ऑक्सफोर्ड यूनिवर्सिटी प्रेस, लंदन/नई दिल्ली
- चतुर्वेदी, श्यामलाल (2002), छत्तीसगढ़ी लोकगीतों का परिचयरायपुर: लोक कला अकादमी।
- पोद्दार, डॉ. सत्यदेव (2014), भारतीय लोक संस्कृति और परंपरा, प्रकाशन विभाग , सूचना और प्रसारण मंत्रालय, भारत सरकार, नई दिल्ली
- लाल, पी. सी. (1990), छत्तीसगढ़ की लोक कलाएँ, भोपाल: मध्य प्रदेश हिन्दी ग्रंथ अकादमी।
- शुक्ल, दयाशंकर (1966), छत्तीसगढ़ी लोक–साहित्य का अध्ययन, इलाहाबाद: साहित्य भवन।
- शुक्ल, हीरालाल (1985), छत्तीसगढ़ का सांस्कृतिक इतिहास, नई दिल्ली: बी. आर. पब्लिशिंग कॉर्पोरेशन।
- वर्मा, शकुंतला (2007), छत्तीसगढ़ी लोक गाथाएँ, रायपुर: छत्तीसगढ़ राज्य हिन्दी ग्रंथ अकादमी।